जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – जुलाई 2022 ।। अंक – 24 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

पशुपालन बना
राजमंती देवी के
जीविकोपार्जन का आधार
(पृष्ठ – 02)

पशुओं की
देखभाल की जानकारी
देती हैं पशु सखी
(पृष्ठ – 03)

मुर्गी पालन से सुधरी
दीदियों के
घर की सेहत
(पृष्ठ – 04)

पशुपालक दीदियों ने संगठित होकर बनाई कंपनी, बढ़ाई अपनी आय

राज्य के ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले गरीब परिवारों और समाज के पिछड़े वर्ग को सहारा देकर उन्हें मुख्य धारा से जोड़ने के लिए 'जीविका' निरंतर प्रयासरत है। जीविकोपार्जन से संबंधित सभी संभव साधनों को अपनाकर समाज के उत्थान हेतु जीविका की भूमिका काफी सराहनीय और समाजोपयोगी है। इसी कड़ी में पशु पालक जीविका दीदियों को संगठित करने और बेहतर बाजार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 'सीमांचल जीविका गोट प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड एवं कौशिकी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड' का गठन किया गया है।

सीमांचल के गरीब परिवारों के लिए आजीविका का एक अहम हिस्सा बकरी पालन है। लेकिन बकरी के वजन के अनुसार उचित मूल्य नहीं मिल पाना, बिचौलियों द्वारा शोषण और असंगठित बाजार के कारण बकरी पालकों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता था। इन परेशानियों से पशुपालकों को दूर करने के लिए सीमांचल जीविका गोट प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड का गठन दिसंबर 2020 में किया गया। इस कंपनी के द्वारा अररिया, पूर्णियाँ और कटिहार के 17 प्रखंडों के 306 पंचायतों मे बकरी पालन गतिविधि संचालित की जा रही है। कंमनी में 10,514 जीविका दीदियां सदस्य हैं। कंपनी का मुख्यालय अररिया है।

सीमांचल जीविका गोट प्रोड्यूसर कंपनी के माध्यम से कंपनी से जुड़ी बकरी पालक दीदियों को बकरी उत्पादन संबंधी सेवाएं, बकरी क्रय–विक्रय के लिए व्यवस्थित बाजार और एक पारदर्शी व्यवस्था मुहैया कराई जा रही है। कंपनी द्वारा 15 प्रखंडों में बकरी संग्रह केन्द्रों की स्थापना की गई है। जिसके माध्यम से बकरी क्रय–विक्रय और इनपुट सेवाएं प्रदान की जा रही है। इसके सुगमतापूर्वक संचालन के लिए मुख्यालय में अधिकारी के रूप में एक मुख्य कार्यकारी अधिकारी कार्यरत हैं। जिनके अधीनस्थ विपणन प्रबंधक, उत्पादन प्रबंधक, वित्त प्रबंधक, लेखपाल और स्टॉकिस्ट हैं। वहीं माइक्रोसेव संस्था द्वारा दीदियों को बकरी पालन में तकनीकी सहयोग एवं कंपनी की आय बढ़ाने हेतु मूल्य संवर्द्धन में मदद प्रदान की जा रही है। बकरी संग्रह केन्द्र स्थापित करने वाले 15 प्रखंडों में एक–एक प्रखंड समन्वयक कार्यरत हैं। जीविका की पशु सखियां घर–घर जाकर बकरियों को कृमि नाशक दवा देने के अलावा इलाज भी करती हैं ताकि दीदियों की बकरियां स्वस्थ रहे।

विगत 6 माह के दौरान कंपनी द्वारा 605 सदस्य दीदियों से 870 बकरियों का क्रय–विक्रय किया गया है। बकरी बेचने वाली सदस्य दीदियों के बैंक खाते में कुल 20,35,542 रुपये की राशि सीधे अंतरित की गयी है। बकरी स्वास्थ्य सेवा के माध्यम से अबतक 10,094 परिवारों की 25,244 बकरियों को कृमिनाशक दवा दी गयी है और 4,165 परिवारों की 9,180 बकरियों का टीकाकरण किया गया है। इसके अलावा कंपनी द्वारा अपने सदस्यों को बकरियों हेतु संतुलित आहार के रुप में बकरी दाना, मिनरल मिक्सचर, हरे चारे का बीज, अजोला घास बाजार से सस्ते दरों पर उपलब्ध कराया जा रहा है।

कोशी प्रमंडल के तहत आने वाले तीनों जिला सहरसा, मधेपुरा और सुपौल में पशुपालन करने वाली जीविका दीदियों को दूध उत्पादन से होने वाली आय को बढ़ाने के उद्धेश्य से 27 सितंबर 2017 को 'कौशिकी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड' का गठन किया गया। तीनों जिलों के 704 गांव की कुल 32,425 पशुपालक दीदियां इस कंपनी की सदस्य हैं। कंपनी द्वारा संचालित दुग्ध संकलन केंद्रों में सदस्य दीदियां दूध बेचकर अधिक मुनाफा कमा रही हैं।

पशुपालन के क्षेत्र में जीविका प्रोत्साहित सीमांचल जीविका गोट प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड एवं कौशकी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के माध्यम से पशुपालन करने वाली जीविका दीदियों को व्यवस्थित बाजार, उत्पादन संबंधी सेवाएं और पारदर्शी व्यवस्था उपलब्ध हुई है। जिससे गरीब दीदियों को पशुपालन से आय में बढ़ोत्तरी के साथ–साथ पशुपालन से संबंधित जानकारी में भी वृद्धि हो रही है।

पशुपालन बना राजमंती देवी के जीविकोपार्जन का आधार

अरवल जिला के कलेर प्रखंड के जयपुर की राजमंती देवी ने अपनी मेहनत से अपनी जिन्दगी को संवारा है। वर्ष 2007 में राजमंती देवी की शादी पप्पु यादव से हुई। पति और पत्नी खेती और छोटे स्तर पर पशुपालन द्वारा अपने परिवार का पालन–पोषण कर रहे थे। राजमंती देवी इंटर तक पढ़ी है। इस कारण उनके मन में हमेशा आगे बढ़ने की ललक और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने की लालसा रही है। कठिनाईयों के कारण राजमंती अपनी इच्छा को पूरा नहीं कर पा रही थी। साल 2016 में कृष्णा जीविका स्वयं सहायता समूह से राजमंती देवी का जुड़ना काफी लाभदायक साबित हुआ। जीविका समूह में जुड़ने के बाद राजमंती देवी समूह की सारी गतिविधियों में बढ़–चढ़ कर भाग लेने लगी। राजमंती देवी ने समूह से 30000 रूपये की ऋण लेकर और अपने बचत के पैसों को मिलाकर 3 भैंस खरीदी। छोटे स्तर पर ही सही उन्होंने भैंसपालन कर अपने रोजगार को बढ़ाया। भैंस को स्वस्थ और अधिक दुधारू बनाने के लिए मौसम के अनुसार चारा का ध्यान रखती हैं। राजमंती दीदी अब नियमित रूप से भैंस पालन करने लगी। अच्छी आमदनी होने के बाद उन्होंने समूह से लिए गए ऋण को ससमय वापस भी कर दिया। भैंस को रखने के लिए लगभग दो कट्ठा जमीन में पशुशेड भी बना ली हैं। वह भैंस को गर्मी में ठंडक देने के लिए तीसी की खल्ली खिलाती हैं और मौसम के अनुसार हरी घास के रूप में जिनोरा और हथिया घास खिलाती हैं। राजमंती देवी प्रतिदिन भैंस के दुध से 3–4 किलो पनीर बनाकर उसे बाज़ार में बेचती हैं और अच्छा मुनाफा कमाती हैं। राजमंती देवी पशुपालन के बारे में अन्य जीविका दीदियों को भी बताती हैं। राजमंती देवी का परिवार अब खुशहाल जीवन जी रहा है।

उन्नत बकरी पालन से जीविका दीदियों को हो रहा लाभ

ग्रामीण क्षेत्र में पशुपालन एक महत्वपूर्ण एवं लाभकारी व्यवसाय है। यह ग्रामीण आर्थिक विकास का अहम हिस्सा भी है। जीविका परियोजना में पशुपालन पर विशेष जोर दिया जाता है और इसके द्वारा गरीब महिलाओं के उत्थान एवं सशक्तीकरण के लिए काम किया जाता है। रोहतास जिला में बकरी पालन व्यवसाय से सैकडों जीविका दीदियाँ जुड़ कर आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं।

पूजा देवी रोहतास जिला के बिक्रमगंज प्रखण्ड में मानी पंचायत के मानी गाँव की निवासी हैं। पूजा अनुसूचित समुदाय से आती हैं। पूजा विकास जीविका महिला ग्राम संगठन से सम्बद्ध तारा जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं। पूजा ने वर्ष 2017–2018 में बकरी पालन का कार्य शुरू किया। उस समय बिहार सरकार की 'समेकित भेड़ एवं बकरी विकास योजना' के अन्तर्गत इनको मुफ्त में 3 बकरी प्राप्त हुए। बकरी पालक जीविका दीदियों को गाँव स्तर पर जीविका द्वारा प्रशिक्षित पशु सखी की मदद मिलती है जो नियमित प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और बकरियों को प्राथमिक चिकित्सा प्रदान कर बीमारी से पूर्व बचाव में सहयोग प्रदान करती है।

पूजा देवी सालोंभर बकरी पालन का कार्य करती हैं और इस व्यवसाय से एक वर्ष में लगभग 40 से 50 हजार रूपये कमाती हैं। बकरी पालन व्यवसाय से पूजा देवी अपने परिवार को आर्थिक रूप से सहयोग प्रदान कर रही हैं। बकरी पालन के साथ–साथ पूजा देवी 'अधिया' पर खेती भी करती हैं। इस तरह खेती तथा पशुपालन दोनों को मिलाकर उनके तथा उनके परिवार के जीवनयापन के जरूरतें पूरी हो जाती हैं। पूजा देवी को सरकार की अन्य योजनाओं का लाभ भी मिला है जिसमें राशन कार्ड, बीमा योजना, श्रम कार्ड तथा आयुष्मान कार्ड आदि शामिल है।

पशुओं की देखभाल की जानकारी देती हैं पशु सखी

जीविका दीदियाँ जीविकोपार्जन के लिए पशुपालन के क्षेत्र में भी हाथ आजमा रही हैं। पशुपालन में अधिकतर दीदियां बकरी पालन को चुनती हैं, जिनसे दीदी की आय बढ़ती है। पशुपालन में भी बकरी पालन चुनने के पीछे मुख्य कारण यह है कि कम लागत, कम जगह एवं कम समय में अधिक आमदनी हो जाती है। आज खगड़िया में अधिकांश दीदियां बकरी पालन द्वारा अपनी आय को बढ़ा रही हैं। खगड़िया जिले में पशु सखियों द्वारा बेहतरीन कार्य किया जा रहा है। पशु सखियों का चयन बकरी पालन में उनके अनुभवों के आधार पर किया जाता है।

पशु सखी की अवधारणा से आज दीदियों में बकरी पालन की महत्ता के साथ –साथ आमदनी भी बढ़ी है। पशु सखी को एक सीमित कार्यक्षेत्र दिया जाता है जिसके अंतर्गत आने वाली सभी पशुपालक दीदियों (बकरी पालक) के घर पशु सखी द्वारा नियमित भ्रमण किया जाता है। दीदी को बकरी पालन से संबंधित सभी जानकारियां एवं आवश्यक सुझाव समय–समय पर पशु सखी द्वारा दी जाती है। बकरी पालन का सही समय एवं पौष्टिक आहार घरेलू उपचार एवं प्राथमिक उपचार के साथ–साथ चिकित्सकीय उपचार कराने जैसे सलाह प्रमुख हैं। आज जीविका दीदियों के बीच पशु सखी काफी चर्चित चेहरा बन गयी हैं। पशु सखी दीदी नियमित रूप से दीदियों से मिलती हैं एवं बकरियों से संबंधित समस्याओं पर चर्चा एवं सुझाव देती रहती हैं। पशु सखी की कुशल कार्य क्षमता के कारण आज बकरियों के मरने की दर काफी कम हुई है एवं अधिक लाभ भी हुआ है। पशु सखी का मुख्य काम जीविका दीदियों की बकरी को टीकाकरण करना तथा कृमि नाशक देना है। पशु सखी प्रति बकरी कृमि नाशक और टीकाकरण के लिए 10 रूपया सेवा शुल्क लेती हैं। साथ ही पशु सखी बकरियों के रख–रखाव और खान–पान के बारे में भी दीदियों को जानकारी देती हैं।

जयबुल निशा ने तलाशी जिंदगी की नयी डगर

दरभंगा जिला के मनीगाछी प्रखंड की जयबुल निशा ने जीविका से जुड़ कर अपने जीवन की नयी डगर तलाश ली है। जयबुल निशा अली स्वयं सहायता समूह की अध्यक्ष हैं। जयबुल निशा की जिंदगी की डगर काफी कठिनाइयों से गुजरी है। पति सदर आलम ईंट भट्ठा पर ईंट ढ़ोने का कार्य कर मुश्किल से परिवार का गुजर–बसर कर पाते थे। जयबुल निशा भी लोगों के खेतों में मजदूरी कर परिवार के बेहतरी में अपना योगदान देती रहीं। पड़ोस के प्रवासी मजदूरों ने सदर आलम को सउदी अरब चलने का सलाह दिया जिससे बच्चों के बेहतर भविष्य का सपना संजोये सदर आलम सउदी अरब चले गये। लेकिन विगत कई वर्षों से सदर आलम की कोई भी खबर नहीं मिली। जयबुल निशा ने अपने पति को तलाशने की हर संभव कोशिश की पर हर बार निराशा ही हाथ लगी। इधर पारिवारिक जिम्मेदारियां जयबुल निशा के सर पर आ गई। लड़कियों की उम्र भी निकाह करवाने की हो गयी। जयबुल निशा इन सब जिम्मेदारियों से घबरायी नहीं बल्कि पहले से अधिक सशक्त होकर चीजों को संभालने लगी। जीविका समूह की दीदियों ने जयबुल निशा को ना केवल सांत्वना दिया बल्कि जीविका से आसान किस्तों पर ऋण उपलब्ध कराकर रोजगार करने के लिए प्रेरित भी किया। जयबुल ने जीविका से ऋण लेकर पशुपालन का कार्य प्रारंभ किया। देखते ही देखते दीदी के पास दर्जनों बकरियां हो गयी जिससे दीदी को आर्थिक सबलता मिली। दीदी सभी पशुओं की देखभाल बहुत अच्छे से करती हैं।

बकरी के अलावा जयबुल निशा गायें और मुर्गियां भी पालती हैं जिससे उनके दैनिक जीवन का खर्च वहन हो पाता है। जयबुल निशा की आर्थिक स्थिति में आज काफी बदलाव आया है। दीदी ने पिछले वर्ष अपनी बड़ी बेटी की शादी भी अपने प्रयास से संपन्न करवायी। पशुपालन के अलावा दीदी अपने घर में श्रृंगार की दुकान का संचालन भी कर रही हैं।

मुर्गी पालन से सुधरी दीदियों के घर की सेहत

जीविका समूह से जुड़े परिवारों को कृषि, गैर कृषि और पशुधन संबंधित जीविकोपार्जन गतिविधियों से जोड़कर उनके घर की आमदनी बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्र के अधिकांश परिवारों की रोजी–रोटी का मुख्य आधार कृषि है। इन परिवारों को कृषि के साथ–साथ पशुपालन गतिविधियों से भी जोड़ा जा रहा है। पशुधन गतिविधियों में मुख्य रूप से गाय–भैंस पालन, बकरी पालन, मत्स्य–बत्तख पालन एवं मुर्गी पालन शामिल है। जीविका समूह की दीदियों को मुर्गी पालन योजना के तहत बैकयार्ड मुर्गी पालन के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। ये लो–इनपुट प्रजाति वाली मुर्गी होती है। इन्हें पालने में अपेक्षाकृत कम लागत होती है जबकि इससे अधिक मात्रा में मांस एवं अंडे का उत्पादन किया जाता है। इस प्रजाति की मुर्गियां विभिन्न रंगों की होती है, जिसे कलर्ड बर्ड भी कहा जाता है। आमतौर पर देशी मुर्गी भी रंगीन होती है, लेकिन मांस एवं अंडा उत्पादन के दृष्टिकोण से इसे बेहतर माना गया है। इसे डूवेल पर्पस बर्ड भी कहा जाता है। यह तीन माह में करीब 2.5 किलोग्राम वजन तक हो जाती है। वहीं एक मुर्गी साल भर में लगभग 150 अंडे देती है। इस प्रजाति की मुर्गियों को घर के पिछवाड़े में पाला जाता है। ये घरों के अपशिष्ट खाद्य पदार्थों एवं अन्य चीजें खाकर पेट भरने में सक्षम होती हैं। इससे इन्हें पालने हेतु बाजार से दाने खरीदने की आवश्यकता नहीं होती है।

जीविका दीदियों को मुर्गी पालन से जोड़ने के लिए दो प्रकार की योजना क्रियान्वित की जा रही है। पहला, समेकित मुर्गी विकास योजना और दूसरा, पूर्ण लागत (फुल कॉस्ट) मॉडल। समेकित मुर्गी विकास योजना (आई.पी.डी.एस.) का पहला चरण सामाप्त होने के बाद इसका दूसरा चरण आई.पी.डी.एस–2 शुरू किया गया हैं। फिलहाल राज्य के सभी जिलों में यह योजना क्रियान्वित की जा रही है। बिहार सरकार के पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग के सहयोग से चलाई जा रही इस योजना में मुर्गी पालन हेतु सब्सिडी का प्रावधान है। इसके तहत पूर्व में स्थापित मदर यूनिट में एक दिवसीय चूजों की खरीद और इन्हें पालने में होने वाले खर्च में सब्सिडी दी जाती है। साथ ही मदर यूनिट से जुड़े परिवारों को ये चूजे सब्सिडी दर पर वितरित किए जाते हैं। इस प्रकार इसे सब्सिडी मॉडल भी कहा जाता है। दूसरी तरफ, पूर्ण लागत मॉडल के तहत किसी भी प्रकार की सब्सिडी नहीं दी जाती है। इसके तहत मुर्गी पालन में होने वाला पूरा खर्च समुदाय को ही वहन करना पड़ता है। फिलहाल यह योजना चार–पांच जिले में ही क्रियान्वित है।

समेकित मुर्गी विकास योजना लागू करने की प्रक्रिया :– इस योजना के तहत पूर्व में स्थापित मदर यूनिट में सूक्ष्म नियोजन के पश्चात 180 परिवारों को जोड़ा जाता है। प्रत्येक परिवारों को 45–45 चूजे दो लॉट में उपलब्ध कराए जाते हैं। पहले लॉट में 25 चूजे एवं दूसरे लॉट में 20 चूजे दिए जाते हैं। इसके लिए प्रत्येक दीदी से 10–10 रुपये प्रति चूजे की दर पर कुल 450 रुपये अंशदान के रूप में नोडल ग्राम संगठन या सीएलएफ में जमा कराया जाता है। इस प्रकार एक मदर यूनिट में एक दिवसीय 8100 चूजे पाले जाते हैं। इन चूजों को 28 दिनों तक पालने के बाद इन्हें दीदियों के बीच वितरित किया जाता है। मदर यूनिट संचालक को चूजा पालने हेतु 6 रुपये प्रति जीवित चूजे की दर से भुगतान किया जाता है। साथ ही इस योजना के तहत एक दिवसीय चूजों एवं दाने की खरीद, चूजों के पालन–पोषण में तकनीकी मदद के अलावा इसके टीकाकरण आदि में भी पूरी सहायता प्रदान की जाती है। वहीं मुर्गी पालने वाले लाभुकों को पिंजड़ा बनाने के बाद प्रोत्साहन राशि के तौर पर 1,000 रुपये सीधे उनके खाते में उपलब्ध कराया जाता है। इस समय 388 उत्पादक समूहों का गठन कर इससे 60,310 परिवारों को जोड़ा गया है। इस प्रकार समेकित मुर्गी विकास योजना से जुड़कर समूह की दीदियां कम लागत में ज्यादा मात्रा में मांस एवं अंडे प्राप्त कर रही हैं। इससे उनके घर की आमदनी एवं सेहत दोनों सुधर रहा है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, पूर्णियाँ
- श्री बिप्लव सरकार – प्रबंधक संचार, कटिहार
- श्री विकास कुमार राव – प्रबंधक संचार, सुपौल
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, बक्सर